B-384
L-25
ETHICS

कर्म नियम / कर्मवाद

उपनिषद →

दो मार्ग बताए गए हैं ┬ श्रेय मार्ग
└ प्रेय मार्ग

जो मार्ग नित्य आनंद स्वरूप परमात्मा को प्राप्त कराने वाला है वह श्रेय मार्ग है जबकि जो मार्ग सांसारिक सुख-सुविधा की ओर ले जाता है वह प्रेय मार्ग है। उपनिषदों के अनुसार श्रेय मार्ग ही उत्तम मार्ग है।

कठोपनिषद में यह आया है कि मनुष्य का शरीर रथ के समान है, विवेक या आत्मा सारथी के समान है, मन लगाम है और इंद्रियाँ घोड़ों के समान है।

जो व्यक्ति विवेकरूपी सारथी के हाथों मन की लगाम थमाता है उसकी इंद्रियाँ

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

नियंत्रण में रहती हैं अन्यथा दुष्ट घोड़ों की भाँति कुपथ पर ले जाती हैं, इस प्रकार यहाँ संयमित एवं विवेकशील जीवन हेतु इंद्रियों पर विवेक के नियंत्रण की बात की गयी है।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो तथा अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

भगवत गीता →

निष्काम कर्म- कर्म फल की आसक्ति से रहित होकर अपने कर्तव्यों का पालन करना ही निष्काम कर्म है। यह प्रवृति मार्ग और निवृति मार्ग में समन्वय स्थापित करता है।

कर्म करना प्रवृति मार्ग को दर्शाता है, कर्म फल की आशक्ति का नहीं होना निवृति मार्ग को दर्शाता है।

आपद धर्म →

किसी विशिष्ट परिस्थिति में जब प्रयोजन बहुत अच्छा हो और कोई नैतिक विकल्प उपस्थित नहीं हो तो फिर वैसी स्थिति में अनुचित कर्म को भी नैतिक दृष्टिकोण से उचित माना जाएगा, जैसे- झूठ बोलकर कुछ निर्दोष व्यक्तियों की रक्षा करना।

जैन दर्शन →

- नास्तिक दर्शन- वेदों की प्रमाणिकता अस्वीकार्य।
- अनीश्वरवादी- ईश्वर की सत्ता नहीं मानता।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

3.

जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांत →

अनेकांतवाद → जैन मतानुसार विश्व में अनेक सत्ताएं हैं और प्रत्येक सत्ता में अनेक धर्म हैं, यह संसार अनेक चेतन जीवों और अजीव पदार्थों से परिपूर्ण है जो परस्पर भिन्न एवं स्वतंत्र हैं। जैन जीव की व्यापक अवधारणा में विश्वास करते हैं।
यहाँ मनुष्य के साथ-साथ पशु-पक्षियों और वृक्षों आदि को भी जीव के रूप में स्वीकार किया गया है, यहाँ प्रकृति प्रेम की अवधारणा है।

स्यादवाद →
ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है इसके अनुसार हमारा समस्त ज्ञान देश, काल, परिस्थिति और संदर्भ के अनुसार ही

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

सही होता है।

महत्व →

सामाजिक और धार्मिक विवादों तथा संघर्षों के निपटारे हेतु उदार मार्ग प्रस्तुत करता है।

यह विभिन्न धर्मों में विद्यमान कट्टरता, सांप्रदायिकता व वैमनस्यता को दूर करने में सहायक है।

स्यादवाद यह कहता है कि हमारा समस्त ज्ञान दृष्टिकोण विशेष से सही है ऐसी स्थिति में हमें अपने विचारों को दूसरे के ऊपर बल पूर्वक नहीं थोपना चाहिए, दूसरों के विचारों के प्रति भी सहिष्णु होना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए, इस तरह स्यादवाद सामाजिक व धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ाने में सहायक है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

5.

जैन दर्शन में मानवमात्र के लिये त्रिरत्न का प्रतिपादन किया गया है, यहाँ जाति, वर्ण आदि का भेद नहीं है।

जैन दर्शन व्यक्ति को स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा देता है, व्यक्ति अपने प्रयासों से चरम लक्ष्य कैवल्य की प्राप्ति कर सकता है, इसके लिए किसी अलौकिक सत्ता को मानने की आवश्यकता नहीं है।

जैन दर्शन में जीवन के चरम आध्यात्मिक लक्ष्य कैवल्य की प्राप्ति हेतु त्रिरत्न की अवधारणा है-

- सम्यक् दर्शन
- सम्यक् ज्ञान
- सम्यक् चरित्र.

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

सम्यक् दर्शन → जैन शास्त्रों (आगम एवं उपांग) तथा तीर्थंकरों के प्रति आस्था व श्रद्धा रखना ही सम्यक् दर्शन है।

सम्यक् ज्ञान → जैन दर्शन के सिद्धांतों एवं प्रतिपादित तत्वों का यथार्थ ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

सम्यक् चरित्र → यथार्थ ज्ञान के अनुसार आचरण करना अर्थात् सद्कर्मों का संपादन तथा दुष्कर्मों का हतोत्साहन ही सम्यक् चरित्र है। इसके अंतर्गत 62 प्रकार के चरित्रों की बात की गयी है जिनमें पंच महाव्रत भी सम्मिलित हैं —
- सत्य
- अहिंसा
- अस्तेय
- अपरिग्रह

8 ब्रह्मचर्य।

<u>सम्यक् ज्ञान</u> → संविधान व कानून का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए।

<u>सम्यक् चरित्र</u> → कानून व संविधान के अनुसार कर्तव्यों का संपादन।

<u>बौद्ध दर्शन</u> →

4 आर्य सत्य

- → दुख है → निर्विवाद व्यवहारिक सत्यता।
- → दुख का कारण है → वैज्ञानिक व्याख्या।
- → दुख का निरोध है → निर्वाण की अवधारणा।
- → दुख निरोध का मार्ग है।

↓

अष्टांगिक मार्ग की विवेचना।

आज यदि समाज पर नजर डाली जाए तो यह ज्ञात होता है कि लोग दुख

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

निवारण हेतु नकारात्मक क्रिया- कलापों में संलग्न हैं, जैसे- नशे का सेवन, अंध-भक्ति, सांसारिक क्रियाकलाप इत्यादि।

बुद्ध मतानुसार दुखों के कारणों का पता लगाना चाहिए और उचित उपायों द्वारा उसे दूर करना चाहिए, इस रूप में यहाँ व्यक्ति को स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा दी गयी है।

सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक कर्मांत की अवधारणा प्रशासनिक अधि-कारियों में सत्यनिष्ठा को बढ़ाने में सहायक है।

सम्यक् आजीव की अवधारणा भ्रष्टाचार को रोकने में सहायक है।

ब्रह्म विहार →

बौद्ध दर्शन में जीवन में सकारात्मक व्यवहार

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

को प्रोत्साहित करने के संदर्भ में ब्रह्म विहार की अवधारणा आई है। ये मन की शुद्धि के साधन हैं-

(i) मैत्री- प्रेम, दया, सहअस्तित्व एवं सहयोग का भाव।

(ii) करुणा- प्राणी मात्र के प्रति हित की मंगल कामना।

(iii) मुदिता (प्रसन्नता/ हर्ष) - दूसरों की उपलब्धियों को देखकर प्रसन्नता का भाव।

(iv) उपेक्षा - सुख-दुख, लाभ- हानि में सम स्थिति → यह निष्पक्षता को बढ़ावा देता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

10.